सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण (आज के परिप्रेक्ष्य में)

श्री प्रदीप गुप्ता
सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर (स्काउट)
प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज
Email: Guptapradeepasoc@gmail.com

डॉ० रनवीर सिंह
फिजिकल एजुकेशन
नेशनल पी०जी० कॉलेज भौगांव, मैनपुरी

सारांश

विश्व समाज में भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा को सदा से ही उच्च स्थान प्राप्त रहा है। अनेक देशों की संस्कृतियां एवं शैक्षिक दृष्टिकोण समय–समय पर बनते रहे, बिगड़ते रहे, किन्तु दोनों की मौलिकता प्रत्येक परिस्थिति में अक्षुण्ण रही।

समाज सेवा में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका आज के परिप्रेक्ष (कोरोना) में अत्यंत आवश्यक हो गई है। जैसा कि हमें ज्ञात है कि चीन के वुहान शहर से फैले कोरोना वायरस ने पूरी दुनियां को घुटनों पर ला दिया है। इसने न सिर्फ भारत बल्कि इटली, फ्रांस, स्पेन, अमेरिका, जर्मनी जैसे विकसित देशों को भी चपेट में ले लिया, लेकिन देखा जाए तो भारत में अभी हालात और देशों की अपेक्षा बेहतर हैं। सरकार लोगों को एक दूसरे से उचित दूरी बनाए रखने की अपील कर रही है। क्योंकि सामाजिक दूरी ही इसका एकमात्र उपचार है, जो केवल लॉकडाउन के माध्यम से ही संभव है।

इस कठिन समय में जरूरतमंदों की सहायता हेतु हमारी सभी सामाजिक संस्थाए जैसेः– राष्ट्रीय स्वयं सेवक, एन०सी०सी०, रोवर रेंजर्स आदि अपने–अपने स्तर पर लोगों को जागरूक करने के साथ–साथ उन्हें राशन, दवाइयां, मास्क मुहैया करा रहे है जिससे कि मानवता के दृष्टिकोण को परिलक्षित कर सके।

मुख्य शब्दः *विकसित देश, दुनिया,राशन, दवाईया, कोरोना वायरस, उपचार।*

प्रस्तावना

विश्व समाज में भारतीय संस्कृति को सदा से ही उच्च स्थान प्राप्त रहा है। अनेक देशों की संस्कृतियां समय–समय पर बनती रही, बिगड़ती रही, किन्तु भारतीय संस्कृति की मौलिकता प्रत्येक परिस्थिति में अक्षुण्ण रही। धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, विज्ञान, रीति रिवाज और संस्कार आदि के समन्वित रूप को ही संस्कृति कहते हैं। सर्वधर्म समभाव की परिकल्पना सर्वप्रथम भारत में ही की गयी। जातक कथाओं से लेकर प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, पंत आदि साहित्यकारों द्वारा

की गयी रचनाओं की लम्बी साहित्यक यात्रा विश्व संस्कृति को हमारी अनुपम भेंट है। हमारी जीवनशैली संस्कारों से परिपूर्ण रही है। बड़ो के प्रति आदर एवं सम्मान तथा छोटो के प्रति स्नेह एवं त्याग ही हमारी सामाजिक संरचना का आधार है। भारत एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जहां नारी को ईश्वर की शक्ति का रूप माना जाता है। गुरु को हमारे समाज में ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया गया है।

किन्तु क्या ये आदर्श आज अपने मूल रूप में विद्यमान हैं ? क्या समाज में आज भी आदर्श और संस्कार का वही रुप उपस्थित है, जिसने भारतीय संस्कृति को पवित्र बनाया था ? वास्तव में आज ये सभी स्थापित प्रतिमान लुप्त होते प्रतीत हो रहे हैं। प्रेम, आदर और त्याग की भावना के स्थान पर द्वेष, क्लेश और स्वार्थ का पोषण हो रहा है। कला अश्लीलता के रंग में रंगी है और विज्ञान ध्वंस का पर्याय बन गया है। 'सबसे बड़ा शिक्षक' मानी जाने वाली नारी आधी संख्या में आज भी अशिक्षित है। ईश्वर की शक्ति का रूप मानी जाने वाली नारी आज मानसिक एवं शारीरिक अत्याचार की पीडा सहने को विवश है। हमारी जीवन–पद्धति तथा सभ्यता में होने वाले ये सभी दुष्परिवर्तन सांस्कृतिक प्रदूषण के मूर्त रूप है।

सांस्कृतिक प्रदूषण के कई कारण है– भूमण्डलीकरण के इस युग में सम्पूर्ण विश्व एक बाजार बन गया है। लाभ और हानि की चिंता ही आज के विश्व–बाजार का आधार है। आज हर कोई अधिकाधिक लाभ पाने के लिए उचित अनुचित को भूलकर आदर्शों का परित्याग कर रहा है। हर कोई सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए घृणित कार्य करने को भी तैयार है। अपने उत्पादनों के प्रचार के लिए उसके विज्ञापन में अश्लीलता का सहारा लेता है तथा इन्हें उत्तेजक रूप में प्रस्तुत करता है जिसका युवा वर्ग पर बुरा असर पड़ता है। भौतिकवादी जीवन पद्धति में मानव को आत्म केंद्रित और स्वार्थी बना दिया है। जिसके परिणामस्वरूप सयुंक्त परिवारों में दरार आ रही है और हमारे आदर्श उस पर आडम्बर प्रतीत होने लगे हैं।

आज वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग भी सांस्कृतिक प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है। ज्ञान और मनोरंजन के लिए बने दूरदर्शन ने केविल टी० वी० के माध्यम से अश्लीलता फैलाने में कमी नहीं छोड़ी है। शांति, प्रेम एवं शुद्धता के इस देश में तनाव, टकराव एवं अशुचि का फैलना सांस्कृतिक प्रदूषण ही है। जातिगम विद्वेष, धार्मिक कट्टरता आदि के पनपने से लोग जेहाद करने लगे है। आज धार्मिक कट्टरता के कारण देश में सांप्रदायिक दंगो की संख्या बढ़ गयी है। वस्तुतः इसे राजनीति के शस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है।

पश्चिमी देशों का अन्ध अनुसरण हमारी संस्कृति को तीव्र गति से दूषित कर रहा है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकाकी परिवारों का चलन इसकी ही देन है। आज हमारी पीढ़ी अपने संगीत, कला आदि को भूलकर विदेशी नृत्य, रीमिक्स पर थिरक रही है। आज का गीत, संगीत, नृत्य इत्यादि गीत–संगीत, नृत्य कम देह प्रदर्शन अधिक है।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त संस्कृति के प्रदूषित होने का सबसे बड़ा कारण है– हमारी व्यक्तिगत सोच और इच्छाशक्ति का ह्रास। हम लोग यह क्यों भूल रहे है कि ''वसुधैव कुटुम्बकम'' का सिद्धांत तो हमारी आदि परम्परा का अंश है। भारत की छवि विश्व गुरु की रही है। जिस

सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा सारा विश्व करता है, हमें उसे बनाकर रखना होगा। हमारी संस्कृति व्यावहारिक एवं शास्त्रीय दर्शन के मजबूत आधार पर टिकी है।

आज यह समय आ गया है जब युवा को पूरी तरह से जाग्रत हो जाना चाहिए। आज युवाओं का भविष्य अन्धकारमय हो रहा है, क्योंकि आज शिक्षा बेची और खरीदी जा रही है। जिसके पास पैसा है शिक्षा उसके पास है। लेकिन क्या वह एक सच्चा विद्यार्थी है ? नहीं !

''शिक्षा'' संस्कृत के 'शिक्ष' धातु में 'टॉप' प्रत्यय लगाने से बना है। जिसका अर्थ है सीखना। शिक्षा का अर्थ विद्याध्ययन या ज्ञान प्राप्ति से ही लिया जाता है, लेकिन ज्ञान का अर्थ केवल उस लिखित पाठ्य सामग्री से नहीं है जो प्राचीन काल में ऋषियों ने दी बल्कि उस नैतिक, आध्यात्मिक तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति से भी है जो मानव की संतुष्टि (मानसिक) के लिये अनिवार्य है। लेकिन आज के समय में शिक्षा एक कागज का टुकड़ा बनकर रह गया है। जिसे रुपये देकर प्राप्त किया जा सकता है। आज व्यक्ति सरस्वती वन्दना के स्थान पर लक्ष्मी वन्दना करता है। धन से शिक्षा प्राप्त करके युवक अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ करते है। ऐसा करने के लिए उन्हें कहीं पर विवश किया जाता है तो कहीं पर प्रेरित किया जाता है। शिक्षा कोई ऐसी वास्तु नहीं जिसे आसानी से प्राप्त किया जा सके। इसके लिए ज्ञान, ध्यान, त्याग, तपस्या और परिश्रम की आवश्यकता होती है। इस सन्दर्भ में भर्वश्हरि का कथन द्रष्टव्य है –

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीतं न गुणों न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविः भरभूताः
मनुष्य रूपेण मृगाश्वरन्ति।

प्राचीन काल में शिक्षा केवल पुरुषों तक सीमित न थी, बल्कि स्त्रियों को भी प्रदान की जाती थी। इस तथ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण अपाला, घोषा, गार्गी और अनुसूचा आदि विदुषियाँ हैं।

प्राचीन समय में युवक तथा युवतियाँ सज्जनतापूर्वक शिक्षा ग्रहण करते, ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपना शिक्षण काल बिताते थे लेकिन आज इसके विपरीत हो रहा है। यदि यही स्थिति चलती रही तो आज के युवाओं का भविष्य क्या होगा ? कुछ युवा तर्क देते हैं कि यह तो सामाजिक परिवर्तन है। इस सन्दर्भ में मेरा मानना है कि यदि परिवर्तन करना ही है तो ऐसी चीजों को बदले जो समाज को गलत दिशा में ले जा रही हों। यदि हम अपनी पौराणिक, वैदिक काल की संस्कृति देखें तो हमें विश्वास नहीं होगा कि जिसे हम अपनी पुरातन संस्कृति बताते हैं वह आज से कितनी भिन्न, निर्मल और सुविकसित थी। यदि परिवर्तन ही करना है तो हम छाज की तरह क्यों नहीं कार्य करते, हमे अच्छी चीजें और गुण ग्रहण करने चाहिए न कि भोंडी नकल। लोग कहते हैं कि यह पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। ऐसा नहीं है हमारी संस्कृति इतनी कमजोर नहीं है। यदि कुछ कमजोर है तो वह हमारा मनोबल है। हम वास्तविकता, सच्चाई और अच्छाई को न पहचान भ्रम में जी रहे हैं।

शिक्षा का अंग्रेजी पर्याय (Education) है। इसका प्रत्येक अक्षर अपने आप में एक विशिष्ट अर्थ रखता है। जिसमें –

E	–	Etiquete	शिष्टाचार
D	–	Discipline	अनृशासन
U	–	Universal Brotherhood	विश्व–बंधुत्व
C	–	Creativity	रचना धार्मिता
A	–	Awareness	जागरूकता
T	–	Transformation	परिवर्तनशीलता
I	–	Intergration	एकता
O	–	Optimism	आशावादिता
N	–	Nobility	सौजन्य

को दर्शाती है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है इसका प्रयोगात्मक उपयोग भी है। स्वामी विवेकानंद ने भी भारतीयों के लिये कहा है– ''तुम्हे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोगात्मक होना चाहिये क्योकि सिद्धांतों के ढेर ने देश का नाश कर दिया है''।

समाज सेवा में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका आज के परिप्रेक्ष (कोरोना) में अत्यंत आवश्यक हो गई है। जैसा कि हमें ज्ञात है कि चीन के वुहान शहर से फैले कोरोनावायरस ने पूरी दुनियां को घुटनों पर ला दिया है। इसने न सिर्फ भारत बल्कि इटली, फ्रांस, स्पेन, अमेरिका, जर्मनी जैसे विकसित देशों को भी चपेट में ले लिया, लेकिन देखा जाए तो भारत में अभी हालात और देशों की अपेक्षा बेहतर हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण लोकडाउन है। भारत सरकार ने जिस तरह से देरी न करते हुए ऐतिहासिक फैसले लिए उसी का कारण है कि हम सभी भारतवासी अभी तक इस खतरनाक वायरस से बाकी देशों की तुलना में अधिक संक्रमित नहीं है । 21 दिन के लोकडाउन की घोषणा के बाद ही समाज का एकभाग पलायन करने में लग गया उसका मुख्य कारण था रोजगार न प्राप्त होना। साथ ही 30 मार्च को दिल्ली के निजामुद्दीन के मरकस में चल रहे धार्मिक कार्यक्रम जिसमें दुनियां के विभिन्न देशों से हजारो मौलवी व अन्य लोगों ने दिल्ली जैसे राज्य में प्रवेश लेने पर दिल्ली सरकार और प्रशासन पर सवाल खड़े कर दिये हैं ।

विश्व में मेडिकल में द्वितीय स्थान पर आने वाले देश इटली के मौजूदा हालात बहुत ही सोचनीय हैं अगर भारत के लोगों ने इसे जल्दी ही गंभीर रुप से नहीं लिया तो 135 करोड़ की घनी आबादी वाले देश भारत की स्थिति बहुत भयानक हो सकती है। भारत में संक्रमित लोगों की संख्या बढती जा रही है, वहीं दूसरी ओर भारत सरकार नए–नए संकेत जारी कर रही है, लोगों को एक दूसरे से उचित दूरी बनाए रखने की अपील कर रही है। क्योंकि सामाजिक दूरी ही इसका एकमात्र उपचार है, जो केवल लॉकडाउन के माध्यम से ही संभव है।

लॉकडाउन एक प्रकार की एमरजेंसी व्यवस्था है। लॉकडाउन का अर्थ तालाबंदी से है। लॉकडाउन में फैक्टरी, संस्थान, सरकारी सेवाएं व अनावश्यक दुकानों की सेवाएं बन्द कर दी गयी है जिससे लोग अनावश्यक कार्य से बाहर न निकले। अनाज व मेडिकल से सम्बंधित समान हेतु ही घर से बाहर जाने की अनुमति दी गयी है, साथ ही बैंक से पैसे निकालने के लिए भी

अनुमति प्रदान की गयी है। इस समय यह लॉकडाउन कोरोना वायरस के भयंकर संक्रमण से होने वाली जनहानि से देश को बचाने के लिए किया गया है।

भारत मे लॉकडाउन के बाद अगर पर्यावरण की बात की जाए तो पता चलता है कि पर्यावरण में कितना परिवर्तन देखने को मिला है वायु पहले से अधिक शुद्ध हो चुकी है। तापमान में भी कमी है, वाहन न चलने के कारण वाहनों से होने वाला प्रदूशण भी समाप्त हो रहा है। स्वच्छता की दृष्टि से देखें तो शहरों की स्थिति पहले से सुद्रण बन गयी है। नदियों का पानी जो कि फैक्टरीयों की वजह से अशुद्ध हो गया था वह अब पीने योग्य साफ हो गया है, जिससे हमें शुद्ध जल की प्राप्ति हो रही है। जल का मानव जीवन पर ही नही बल्कि पशु–पक्षियों के जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

चीन, इटली, फ्रांस, स्पेन, न्यूजीलैंड, पोलैंड, डेनमार्क, अमेरिका व भारत सभी देश इस समय लॉकडाउन की स्थिति में है। लॉकडाउन से सभी देशों की आर्थिक स्थिति को बहुत नुकसान हुआ है। भारत की आर्थिक स्थिति में भी बहुत गिरावट आयी हैं जिससे देश को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ सकता है। भारत पहले से ही विकासशील देशों की श्रेणी में आता है और उसके बाद देश को इस स्थिति में खुद को रखकर आगे बढ़ना बहुत मुश्किल हो सकता है।

इस महामारी के संकट में पूरे देश की स्थिति सोचनीय बन गयी है हम सभी को इस संकट की घड़ी में भारत सरकार द्वारा जारी किये गए दिशा–निर्देशों का पालन करना चाहिए व लॉकडाउन जैसे उचित निर्णयों को अपनाना चाहिए। जिसके माध्यम से सामाजिक दूरी आए व महामारी के फैलने की आशंकाएं कम हो जायें। इस कठिन समय में जरूरतमंदों की सहायता हेतु हमारी सभी सामाजिक संस्थाए जैसेः– राष्ट्रीय स्वयं सेवक, एन०सी० सी०, रोवर रेंजर्स आदि अपने–अपने स्तर पर लोगों को जागरूक करने के साथ–साथ उन्हें राषन, दवाइयां, मास्क मुहैया करा रहे है। जिससे कि मानवता के दृष्टिकोण को परिलक्षित कर सके।

कोरोनावायरस के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद् भी अपने स्तर कार्य कर रहा है। संघ के कार्यकर्ता लोगों को बीमारी के प्रति जागरुक कर रहे हैं साथ ही लोगों को सेनेटाइजर, मास्क और जरूरत की दवाईयां भी मुहैया करा रहे हैं। गरीब जरुरतमंदों के भोजन के लिए सहायता केंद खोले गए है। वहीं एक बैंक में खाता भी खोला गया है जिसमें लोगों से स्वेच्छा से राशि दान देने की अपील भी की गई है।

संघ के स्वयं सेवक देश के अलग–अलग हिस्सों में जरुरतमंद लोगों तक राहत पहुंचाने में जुटे हुए हैं। इस दौरान वह भोजन से लेकर, सेनेटाइजर, मास्क, दवाईयां और अन्य राहत सामग्री वितरित कर रहे हैं। देश के अलग–अलग राज्यों में स्वयंसेवक बस्तियों में जाकर न केवल मास्क वितरित कर रहे साथ ही स्वच्छ जीवन शैली बनाए रखने के लिए भी प्रेरित कर रहे है। इसके अलावा कैसे लोग कोरोना वायरस संक्रमण की चपेट में आने से बचें इसके तौर –तरीके पर भी लोगों को जागरूक कर रहे हैं। वहीं संघ ने अपने करीब 70 हजार शाखा और उनके जुड़े सहयोगियों को भी इसमें प्राथमिकता से शामिल होने के लिए कहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने पिछले दिनों ही स्वयंसेवकों से कोरोना के खिलाफ लड़ाई में स्थानीय प्रशासन के साथ जुटने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वयंसेवक छोटी–छोटी टीमें बनाकर समाज में स्वच्छता, स्वास्थ्य जागरुकता लाने का कार्य करें। साथ ही स्वयंसेवक जरुरतमंदों को खाद्य सामग्री के वितरण की भी व्यवस्था में जुटें। इस आह्वान के बाद से ही देश के अलग अलग राज्यों में आरएसएस के स्वयंसेवक सेवा कार्य में जुट गए है।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी कोरोना नामक विषाणु के कारण थम सी गई है और मानव की जीवनशैली में बहुत परिवर्तन आ चुका है। जैसा कि आप सभी जानते है यह संस्थायें कठिन परिस्थितियों का सामना करने तथा आपातकालीन स्थिति में सेवा करने का लिया गया प्रशिक्षण समाज के विकास में परमार्थ का काम करती है।

संघ के एक पदाधिकारी ने दिप्रिंट से कहा, 'जब कभी भी कोई भी प्राकृतिक आपदा आती है तो हमारे स्वयंसेवक हमेशा लोगों की मदद के लिए तैयार रहते है, इसलिए हम यहां भी लोगों की मदद के लिए आगे आए हैं। पदाधिकारी ने यह भी कहा, 'लॉकडाउन की स्थिति में कमजोर, बेघरों और सड़क किनारे रह रहे लोगों को भोजन की परेशानी उत्पन्न हो सकती है। ऐसे में मानवता का तकाजा है कि गरीब और जरुरतमंद को दैनिक जीवन की वस्तुओं के साथ उन्हें उनकी जरुरत की वस्तु भी मुहैय्या कराई जाए। जिससे लॉकडाउन की स्थिति में खाने के अभाव कोई भी भूखा न रहे। वहीं जरुरमंद लोगों को सेनेटाइजर, मास्क, दवाईयां भी उनकी सुरक्षा के लिए वितरित की जा रही है।

आज समूचा विश्व कोविद–19 की समस्या से जूझ रहा है। प्रत्येक जगह यह अपने पांव पसार चुका है। अंतर केवल इतना है कि कहीं कम और कहीं ज्यादा फैला हुआ है।

युवा देश के कर्णधार है। विकास की बन्दूक उन्हीं के कंधों पर है। आज इस महामारी से जूझने के लिए उनकी महत्ती आवश्यकता है। जरूरत है कि वह अपनी शक्ति को पहचानने और समूचे समाज में जागरूकता फैलाये ताकि यह महामारी शीघ्र–अतिशीघ्र समाप्त हो सके। जिससे हमारे साथ–साथ हमारे देश का भविष्य भी उज्जवल हो। केवल युवा ही वह शक्ति है जो समाज में फैला यह विषाणु जड़ से उखाड़ कर फेंक सकता है।

निःसंदेह आज का परिवेश हम सभी के लिए चुनौती भरा है। सभी को इस विषमताओं व विपत्तियों से निपटने के लिए सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करना होगा। इन सब नियमों का पालन करते हुए आप देखेंगे कि शीघ्र ही हमारी मानसिकता स्वस्थ होगी और एक सशक्त समाज का निर्माण होगा, जो हर प्रकार से संपन्न होगा और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पुनः स्थापित कर विश्व को नेतृत्व प्रदान करेगा। आइये हम सब मिलकर संकल्प ले कि जिस क्षेत्र में भी जो कुछ भी कर रहे है उसे समाज कल्याण की इसी भावना से प्रेरित होकर करें।

सन्दर्भ ग्रंथ

लेख

1 संस्कृति – सांस्कृतिक विचारों और अभिव्यक्तियों की प्रतिनिधि पत्रिका, संस्कृति मंत्रालय, भारत

सरकार द्वारा प्रकाशित

2 भारतीयता की पहचान (गूगल पुस्तक य लेखक – विद्यानिवास मिश्र)

3 अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनी, इतालवी, जर्मन और रोमानी में भारतीय परंपराओं और विश्व संस्कृति पर निबंध, वाद विवाद, मल्टीमीडिया वर्णन आदि

4 भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास

5 विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति (रघूत्तम शुक्ल)

6 शाश्वत है भारतीय संस्कृति और इसकी विरासत !! (के० के० यादव)

7 भारतीय संस्कृति और उसके मायने (द थर्ड आई)

8 Nilakanta Sastri, K.A. (2002) [1955]. A history of South India from prehistoric times to the fall of Vijayanagar. नई दिल्लीः Indian Branch, Oxford University Press. आई०एस०बी०एन० 0-19-560686-8.

9 Narasimhacharya, R (1988) [1988]. History of Kannada Literature. नई दिल्लीः , Madras: Asian Educational Services. आई०एस०बी०एन० 81-206-0303-6.

10 अभिव्यक्ति 2003–2004 मेरठ कॉलेज पत्रिका